

**Musicbook** — इक्कीसवीं सदी की एक विधा  
मैं ऐसी संगीत रचता हूँ  
जो गाती नहीं, सोचती है।  
मेरे हाथों में संगीत एक आकाश बनता है, जहाँ भीतर की आवाज़ गूँजती है।

उस आकाश में मैं बुनता हूँ  
उन शब्दों को जो अमर हैं।  
वे शब्द पढ़े नहीं जाते —  
वे साँस लेते हैं, महसूस होते हैं।

यही है **musicbook**।  
न यह गीत है, न पाठ,  
न कोई ऑडियोबुक।

यह एक ध्वनि-आकार है  
जहाँ साहित्य वातावरण में घुल जाता है।

**Musicbook** में मैं मंच नहीं करता, मैं रचता हूँ — एक वातावरण, एक स्थान,  
जहाँ मौन भारी है, और कल्पित स्वर — निष्पक्ष है, सच्चा है, समय से परे है।

**Musicbook** एक विचार से शुरू होता है।  
कभी एक कवि की पंक्ति, कभी दार्शनिक की साँस,  
या लेखक की गूँज।

मैं रचता हूँ ध्वनि की वास्तुकला:  
धीमे ताल, कोमल स्वर, और सुरों की छाया।

वह स्वर कथावाचक नहीं है, वह प्रतिध्वनि है।  
मैं न व्याख्या करता हूँ, न नाटक।  
मैं आमंत्रित करता हूँ — ध्वनि में प्रवेश करने को, और अर्थ को उभरने देने को।

**Musicbook** मनोरंजन नहीं है।  
यह विचार है, ध्यान है, एक शाश्वत पुस्तक है।

यह उस एकाकी श्रोता की भावना है  
जो न भूलना चाहता है, बल्कि याद करना।

यह मेरा उत्तर है उस प्रश्न का —  
जब साहित्य मुद्रित न रहेगा,  
तब वह संगीत बन जाएगा!